गायत्री परिवार का लक्ष्य

भगवती देवी शर्मा

गायत्री परिवार का लक्ष्य

लेखक :

माता भगवती देवी शर्मा

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४ मूल्य : ४.०० रुपये

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

लेखक :

माता भगवती देवी शर्मा

पुनरावृत्ति सन् २०१४

मुद्रक :

युग निर्माण योजना प्रेस,

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

गायत्री परिवार का लक्ष्य

गायत्री को भारतीय संस्कृति की जननी और यज्ञ को भारतीय धर्म का पिता माना जाता है। गायत्री का संदेश है—सद्विचार, विवेक, सद्भावना, आध्यात्मिक उच्चस्तर, मानवता के आदर्शों की अभिव्यक्ति। यज्ञ का तत्त्वज्ञान है—त्याग, सत्कर्म, सदाचार, संयम, सेवा, सामूहिकता, सहिष्णुता, सहयोग, स्नेह, उदारता, श्रमशीलता, तितिक्षा। गायत्री हमें मानसिक दृष्टि से महान बनने की प्रेरणा देती है और यज्ञ की शिक्षा सांसारिक दृष्टि से आदर्शवादी, धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण महापुरुष बनने की है।

गायत्री और यज्ञ की उपासना को धर्म-कर्मों में प्राथमिक स्थान देकर ऋषियों ने मानवता के आदर्शों में मनुष्य को लगाए रखने का प्रयत्न किया है। यों गायत्री और यज्ञ के असंख्यों वैज्ञानिक लाभ हैं, इनके द्वारा अनेक समस्याओं को सुलझाने का भारी उपयोग भी है। पर यहाँ इस पुस्तक में इस दृष्टिकोण से विचार करेंगे कि गायत्री यज्ञ की धर्म प्रवृत्ति को एक आंदोलन का रूप देकर हम किस प्रकार नैतिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

प्रतीक पूजा के रूप में भी गायत्री और यज्ञ को सद्विचारों एवं सत्कार्यों का माध्यम बताकर इनकी आवश्यकता समझाने तथा अपनाने के लिए जनसाधारण को प्रेरित करने का लक्ष्य स्थिर किया गया है। कपड़े का छोटा सा तिरंगा झंडा जिस प्रकार राष्ट्रीयता का, राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक माना जाता है, उसका अभिवंदन किया जाता है, उसी प्रकार सद्विचारों और सत्कार्यों के प्रतीक के रूप में सर्वत्र गायत्री तथा यज्ञ का अभिवंदन-पूजन-अर्चन हो तो इससे मानवता एवं नैतिकता के आदर्शों को प्रोत्साहन मिलना स्वाभाविक ही है।

राष्ट्र निर्माण के लिए

राष्ट्र निर्माण के लिए आज अनेक प्रयत्न हो रहे हैं। संपत्ति और समृद्धि बढ़ाने के लिए कितनी ही योजनाएँ बन रही हैं? इनके सफल होने तथा उनसे उत्पन्न धन द्वारा सुख-शांति बढ़ने की तब तक आशा नहीं की जा सकती जब तक कि जनसाधारण का नैतिक स्तर ऊँचा न उठाया जाए। जिन व्यक्तियों के हाथ में आज योजनाओं को कार्यान्वित करने तथा न्याय, शासन, अर्थ, व्यवसाय, यातायात, निर्माण, कर वसूली आदि को चलाने आदि की जिम्मेदारी है, उनमें से बहुत कम ऐसे हैं जो ठीक तरह अपना काम करते हैं। इन कार्यों से जनता को या सरकार को जो लाभ होना चाहिए, उसका एक बड़ा अंश इन कार्यकर्ताओं द्वारा ही अपहरण कर लिया जाता है। जनता की भी मनोवृत्ति यही है। बीज, कुआँ, उद्योग-धंधे चलाने आदि के नाम पर लिया हुआ सरकारी ऋण, विवाह-शादियों की धूमधाम में फूँक दिए जाते हैं। आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं, सामाजिक, शारीरिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में यह भ्रष्टाचारी मनोवृत्ति ऐसी कठिनाई उत्पन्न करती है जिससे राष्ट्रीय उन्नति के लिए किए हुए अनेक प्रयत्नों के परिणाम आशाजनक नहीं हो पाते।

हम हजारों वर्षों के अज्ञानांधकार युग को पार कर राजनीतिक दृष्टि से स्वाधीन हुए हैं। अब निर्माण कार्य हमें स्वयं करना है। इसके लिए सरकारी और गैर-सरकारी भौतिक प्रयत्न चल रहे हैं—यह संतोष की बात है, किंतु साथ ही जनसाधारण का मानसिक, नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक स्तर ऊँचा उठाने की भी भारी आवश्यकता है। इसके बिना आर्थिक उन्नति का लक्ष्य पूरी तरह सफल नहीं होगा। यदि किन्हीं अंशों में सफलता मिली भी तो इससे लोगों की विलासिता एवं फजूलखरची ही बढ़ेगी, वह पैसा उनमें दोष-दुर्गुण ही पैदा करेगा। संपत्ति का सच्चा लाभ भी वही उठा सकते हैं, जिनमें विवेकशीलता

और दूरदर्शिता हो। इन दो वस्तुओं के अभाव में बढ़ी हुई समृद्धि, स्वयं मनुष्य के लिए एक विपत्ति ही बन सकती है।

राष्ट्र के स्वस्थ विकास के लिए—अविद्या, दरिद्रता एवं कुरीतियों के बंधनों से छुटकारा प्राप्त करने के लिए—सामाजिक एवं बौद्धिक क्रांति के लिए—निश्चित रूप से जनसाधारण का नैतिक स्तर ऊँचा करना होगा। इसकी उपेक्षा करके अन्य मार्गों से प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकना कठिन है। भारतीय संस्कृति—नैतिकता एवं मानवता की सार्वभौम संस्कृति है। इस देश की महान परंपराओं में से प्रत्येक का निर्माण मनुष्य को सदाचारी, संयमी एवं समाजसेवी बनाने की दृष्टि से ही हुआ है। हमारा प्राचीन इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र, समाज तंत्र, कर्मकांड, शिष्टाचार, आहार-विहार, विचार-प्रवाह, आचार, विधान, वेश-विन्यास, आदर्श, उद्देश्य, सभी कुछ ऐसा है कि जिसे अपनाने वाला नैतिक तत्त्वों का सहज ही अनुचर बन जाता है जो विश्व में शांति, सुरक्षा, उन्नति और प्रसन्नता की स्थिति बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान

यही भारतीय संस्कृति है। उसका पुनरुत्थान आवश्यक है। हमारे नैतिक आंदोलन की यही आधारशिला हो सकती है। अज्ञानांधकार के मध्ययुग में जबकि प्रत्येक क्षेत्र में बुराइयाँ और विकृतियाँ घुसीं उसी समय हमारा सांस्कृतिक क्षेत्र भी गंदला हो गया। उसमें ऐसे विचार, ऐसे आचार घुस पड़े, जिनके कारण हमारी महान सांस्कृतिक परंपरा विकृत होकर ऐसी हो गई जिनके कारण आत्मिक स्तर का ऊँचा होना तो दूर, उलटे अनेकों प्रकार के अध:पतन उपलब्ध हुए।

जिस देश के लोग अपनी संस्कृति का संदेश लेकर विश्व के कोने-कोने में जाते थे, वहाँ के भिन्न भाषा, वेश, भाव, आदर्श, आचार-

विचार, धर्म के लोगों को प्रभावित करके अपनी संस्कृति में दीक्षित करते थे। वहाँ के लोगों की परंपराएँ संकीर्णता में बँधकर इतनी हीन हो गई कि चंद मुसलमानों ने आक्रमण करके हमारे ही करोड़ों भाई हमसे छीन लिए—उनके लाख विलाप करने पर भी हम उन्हें अपने धर्म में वापस न ले सके, फलस्वरूप पाकिस्तान के रूप में उसका दंड हमें चुकाना पड़ा। संकीर्णता, विवेकहीनता की अनेकों कुप्रथाएँ आज भी उसी प्रकार हमारे सामाजिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में डेरा डाले बैठी हैं। इन अविवेकपूर्ण अंधपरंपराओं से छुटकारा पाए बिना हमारी प्राचीन संस्कृति का रूप स्पष्ट नहीं हो सकता। आज तो हम दूसरे देशवासियों की दृष्टि में, विचारशीलता लोगों की दृष्टि में, कुरीतियों और संकीर्णताओं के पिटारे हैं। अपनी इन बुराइयों से छुटकारा प्राप्त करने के लिए सच्चा प्रयत्न करने की आवश्यकता है, तभी हमारा ऋषियुग को वापस लाने का सांस्कृतिक पुनरुत्थान का लक्ष्य पूरा होगा।

यह पहले ही बताया जा चुका है कि गायत्री यज्ञ आंदोलन का लक्ष्य सत् विचार और सत् आचारों का विस्तार करना है। यही भारतीय संस्कृति है। नैतिक पुनरुत्थान भी इसी को कहना चाहिए। हमारे देश की विचारधारा, भावना एवं परंपरा के अनुरूप राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण की जो रूपरेखा हो सकती है, उसे सांस्कृतिक पुनरुत्थान नाम दिया जा सकता है। एक शब्द में यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति और सच्चरित्रता एक ही वस्तु है। मानवता के सारे आदर्श उसमें सन्निहित है।

सुख-शांति की सारी संभावनाएँ इस बात पर निर्भर हैं कि हम लोग किस सीमा तक अपने विचारों को पवित्र रखते हैं, कितना एक-दूसरे के साथ सचाई, प्रेम एवं भलमनसाहत का व्यवहार करते हैं। मनुष्य जब एक-दूसरे से सहयोग करता है, कठिनाइयों को घटाने एवं सुविधाओं को बढ़ाने में तत्पर होता है तो उसकी रचनात्मक शक्ति बढ़

जाती है। इस रचनात्मक शक्ति का लोकहित में उपयोग करने से प्रसन्नता, आनंद, उल्लास का—सुख-शांति की अभिवृद्धि का द्वार खुल जाता है। इसके विपरीत जब दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों के कारण मनुष्य छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष, पाप, पाखंड, शोषण और आक्रमण का मार्ग अपनाता है तो दुःख दारिद्र्य की, क्लेश-कलह की घटनाएँ घुमड़ने लगती हैं। जब हम एक-दूसरे को नीचा दिखाने, दुःख देने के लिए तत्पर होते हैं तो अधःपतन की सत्यानाशी संभावनाएँ सामने आ खड़ी होती हैं।

संसार में शांति का क्षेत्र बढ़े, परस्पर सहयोग और सद्भाव-पूर्वक सब लोग जीवनयापन करें। इसके लिए यह आवश्यक है कि हर व्यक्ति के अंतःप्रदेश में मनुष्य के अनुरूप आदर्शों के प्रति गहरी निष्ठा स्थिर रहे। मानव जीवन का गौरव और समाज की सुव्यवस्था इसी बात पर निर्भर है कि हर व्यक्ति दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करे जैसा वह अपने लिए दूसरों से चाहता है। जिस प्रकार दूसरों के दुर्व्यवहार से अपने को कष्ट होता है, उसी प्रकार जब मन में यह अनुभूति होने लगे कि हमारे दुर्व्यवहार से दूसरों को भी कष्ट और असुविधा होती है तो हमारा मन बुराइयों से घृणा करने लगेगा। बुराइयों के प्रति घृणा और सत्प्रवृत्तियों के प्रति श्रद्धा जब बढ़ती है तो समझना चाहिए कि असुरता का विनाश और देवत्व का विकास हो रहा है। यही वह स्थिति है जिसे उत्पन्न करके इस पृथ्वी पर स्वर्ग अवतरित करने के स्वप्नों को साकार किया जा सकता है।

राष्ट्र को उन्नतिशील बनाने के लिए जो प्रयत्न चल रहे हैं उनकी सफलता के लिए प्रत्येक क्षेत्र में सच्चरित्रता की अभिवृद्धि होना आवश्यक है। नेता, सरकारी कर्मचारी, व्यापारी, किसान, मजदूर, अध्यापक, चिकित्सक, शिल्पी, धर्मजीवी, सभी यदि अपने-अपने कर्त्तव्य का ठीक प्रकार पालन करने लगें। ईश्वर को सर्वव्यापक समझकर ईमानदारी और सचाई पर आरूढ़ हो जाएँ तो जितना कार्य

अब बहुत धन खरच करने पर भी अधूरा होता है उससे भी कहीं अधिक प्रगति कम धन और कम समय में पूरी हो सकती है।

विचारक्रांति की योजना

विचारों की शक्ति महान है। मनुष्य को जितनी आवश्यकता उत्तम अन्न, स्वच्छ जल, खुली हवा, रोशनी, सफाई, कपड़ा, मकान, परिश्रम तथा आराम की है उससे कहीं अधिक आवश्यकता उत्तम विचारों की है। जिसका मस्तिष्क विचार शून्य है, जो घटिया किस्म के विचारों में डूबा रहता है, उसे एक प्रकार का पशु ही कहना चाहिए। केवल रोटी, वासना और तृष्णा में संलग्न व्यक्ति मनुष्य के महान गौरव को कलंकित करने वाला है। इस कलंक की कालिमा को छुड़ाने के लिए विचारशीलता तथा विवेकशीलता को बढ़ाने का प्रयत्न करने की भारी आवश्यकता है। शिक्षा के विभिन्न साधन आजीविका संबंधी या सांसारिक जानकारियों को बढ़ाने तक ही सीमित रह जाते हैं। जरूरत इस बात की है कि विद्या का क्षेत्र बढ़ाया जाए। लोग अपने बारे में, आत्मा के बारे में, परमात्मा के बारे में, अपने कर्त्तव्यों के बारे में अधिक जानें। यह जानकारी जितनी ही बढ़ेगी, उतना ही सुख-शांति के क्षेत्र का विस्तार होगा।

गायत्री-परिवार का प्रत्येक सदस्य विचारशील एवं स्वाध्याय प्रेमी बने, इसके लिए संस्था यह विस्तृत स्टडी सर्किल-अध्ययन क्षेत्र—बनाने में संलग्न है। शाखा संचालकों से तथा परिवार के प्रत्येक सक्रिय कार्यकर्त्ता से यह आशा की जाती है कि वह भारतीय संस्कृति की महानता प्रतिपादित करने वाला साहित्य स्वयं नियमित रूप से पढ़े तथा अन्य धर्मप्रेमियों को ऐसा साहित्य पढ़ने की प्रेरणा करें। जिनमें इस प्रकार की अभिरुचि के बीज दिखाई दें, उनके घर पर जाकर नैतिक साहित्य पढ़ने के लिए दिया जाए, जब पढ़ लें तब वापस लाया जाए। एक के बाद दूसरी पुस्तकें उन्हें पढ़ने को मिलती रहें इसका प्रयत्न किया जाए।

गायत्री परिवार द्वारा जितना बल होम-यज्ञ पर है, उतना ही वरन उससे भी कहीं अधिक बल ज्ञानयज्ञ पर दिया जाता है। जिस प्रकार हम सुंदर खाद्य पदार्थ प्राप्त करने की, उन्हें खरीदने की इच्छा करते हैं उसी प्रकार सत्साहित्य पढ़ने की इच्छा हर व्यक्ति के मन में उठे और वह उसे पूरा करने के लिए प्रयत्न करें। यह प्रवृत्ति पैदा करना एक पुनीत सत्कर्म माना गया है। ज्ञान की भूख पैदा करना और बौद्धिक भोजन जुटाना यही ज्ञानयज्ञ है। ज्ञानयज्ञ की प्रक्रिया मात्र गायत्री परिवार के क्षेत्र में ही नहीं, उससे बाहर भी तेजी से चले, यह प्रयत्न पूरी शक्ति के साथ करने का कार्यक्रम बनाया गया है।

आवश्यक खरचों की लिस्ट में आत्मिक आहार के लिए कुछ खरच करने का बजट हर किसी को बनाना चाहिए। जिस प्रकार शरीर को रोटी आवश्यक है उसी प्रकार आत्मा को नित्य सद्विचारों की योजना आवश्यक है। इस तथ्य को हर विचारशील व्यक्ति को अनुभव करने का अवसर मिलना चाहिए। संस्था का प्रयत्न यह होगा कि अध्ययन के प्रति लोगों में जो उपेक्षा एवं आलस्य है उसे दूर किया जाए। जनजीवन में भारी हेर-फेर करने के लिए जिन प्रौढ़ विचारों की आवश्यकता हैं उन्हें उत्पन्न करने के लिए सत्साहित्य का प्रमुख स्थान है। ज्ञानयज्ञ द्वारा ही जनसाधारण को उचित दिशा में सोचने और उचित गतिविधि बनाने की प्रेरणा देना संभव हो सकता है।

बुद्धि की देवी गायत्री के उपासकों के लिए स्वाध्यायशील होना ही नहीं, सद्विचारों का प्रचारक होना भी आवश्यक है। इस संस्था के हर सदस्य पर यह जिम्मेदारी डाली गई है कि वह धार्मिक क्रांति के लिए सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए विचारशीलता का क्षेत्र तैयार करें। अपना कुछ समय नियमित रूप से दूसरों को सद्विचार देने में लगाया करें। अपनी आजीविका में से कुछ अंश, चाहे वह एक पाई या एक मुट्ठी अन्न ही क्यों न हो, नित्य ज्ञानयज्ञ के लिए निकाला करें। इस

बचाए हुए पैसे से सत्साहित्य खरीदकर अपने घर में स्थापित ज्ञान-मंदिर की अभिवृद्धि करते रहना और उसका लाभ अपने कुटुंबियों, पड़ोसियों, मित्रों, परिचितों को प्राप्त कराने के लिए प्रयत्न करना, यह श्रेष्ठ ब्रह्मदान प्रत्येक गायत्री प्रेमी का पवित्र कर्त्तव्य है।

विदेशों में विभिन्न विचारधाराओं को फैलाने के लिए स्टडी सर्किल—अध्ययन क्षेत्र चलते हैं। यह बड़ी ही प्रभावशाली प्रक्रिया है। प्रज्ञा अभियान अपने कार्यकर्त्ताओं पर यह जोर देती है कि बौद्धिक क्रांति के प्रमुख आधार इस ज्ञानयज्ञ को वे अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य समझें। अन्नदान से ब्रह्मदान का महत्त्व सौ गुना अधिक माना गया है। ब्राह्मण भोजन का तात्पर्य-सद्विचार फैलाने वाले व्यक्तियों-ब्राह्मणों का पोषण ही है। अब उस प्रकार के ब्राह्मण ढूँढ़े नहीं मिलते, जिनका जीवन निरंतर ज्ञान-प्रचार में ही लगा रहता हो। ऐसी दशा में सत्साहित्य का प्रचार, वितरण, ज्ञानदान ही ब्रह्मभोज की आवश्यकता को पूरा करता है। प्रत्येक शुभ कार्य के साथ, प्रत्येक पर्व, उत्सव या प्रसन्नता के अवसर पर हमें सस्ते सत्याहित्य का उपहार वितरण करना चाहिए। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए गायत्री तपोभूमि लागत से भी कम मूल्य में अत्यंत सस्ता, नैतिक एवं सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न करने वाला साहित्य तैयार करने में संलग्न है। ईसाई मिशन जिस प्रकार अत्यंत सस्ता साहित्य छापकर-प्रसारित करके अपने विचारों को घर-घर तक पहुँचाने में, उनसे प्रभावित लोगों को ईसाई बनाने में समर्थ हुए, उसी आधार को अपनाकर हम भी जनसाधारण की मनोदशा में परिवर्तन कर सकते हैं, कुमार्गगामी लोगों को सन्मार्ग पर ला सकते हैं, स्वार्थपरता, दुष्प्रवृत्तियों से छुड़ाकर एक महान गौरवशाली राष्ट्र के सच्चरित्र नागरिकों के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। ज्ञानयज्ञ इसी उद्देश्य से आरंभ किया गया है। जीवन को यज्ञमय बनाने, भावना के ज्ञानयज्ञ से प्रदीप्त करने के लिए संस्था के प्रचार कार्यक्रम बनाए गए हैं।

आत्मकल्याण की उपासना

हमारे देश का हर धार्मिक प्रकृति का व्यक्ति अपनी धार्मिक महत्त्वाकांक्षाएँ—स्वर्गप्राप्ति, जीवनमुक्ति, ब्रह्म-निर्वाण, ईश्वरप्राप्ति, ऋद्धि-सिद्धि आदि के रूप में व्यक्त करता है। धर्मकृत्यों में उसका लक्ष्य प्राय: यही सब होता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जो पूजा-पाठ, तप-त्याग, दान-पुण्य, तीर्थयात्रा, देव आराधना, स्वाध्याय, सत्संग, व्रत-उपवास, कथा-वार्ता, कीर्तन-भजन, ब्रह्मभोजन आदि की परंपराएँ प्रचलित हैं। उनका रूप भी ऐसा विकृत हो गया है कि उनका लाभ पुरोहित वर्ग की आजीविका चलने या व्यक्तिगत मन संतोष कर लेने के अतिरिक्त, सामाजिक एवं नैतिक दृष्टि से कुछ नहीं होता। वैसे धर्मकार्यों को खरी कसौटी यही है कि उनके फलस्वरूप जनसमाज का नैतिक एवं बौद्धिक स्तर ऊँचा उठना चाहिए। जो कर्मकांड, धर्म-कर्म इस कसौटी पर खरे नहीं उतरते, उनके खरेपन पर सहज ही संदेह किया जा सकता है।

गायत्री उपासना इस दृष्टि से खरी उपासना है। गायत्री मंत्र के २४ अक्षरों में से प्रत्येक में सद्विचारों की प्रेरणा है। गायत्री उपासक अपने प्रत्येक जप में जब मानव जीवन की सर्वोपरि आवश्यकता, सद्विचार, सद्विवेक के लिए बार-बार ईश्वर से प्रार्थना करता है तो आखिर उसके अंत:करण में इस महान तत्त्व की—सद्भाव की, सदाचार की श्रेष्ठता सुदृढ़ होने ही लगती है। मनुष्य जैसा सोचता है वैसा बनता है। आंतरिक श्रेष्ठता की महत्ता एवं आवश्यकता के प्रति घंटों चित्त को एकाग्र करके साधन करने वाला साधक निश्चय ही मंद या तीव्र वेग में अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता ही है। उसके नैतिक एवं आत्मिक स्तर में श्रेष्ठता के तत्त्वों का विकास होता ही है।

आत्मा में सतोगुण और श्रेष्ठता बढ़ने से किसी भी मनुष्य का आंतरिक एवं भौतिक जीवन सुख-शांतिमय बन सकता है, उसकी अनेक उलझनें एवं समस्याएँ सुलझ सकती हैं। गायत्री उपासना का

माहात्म्य बताने वाली अन्य पुस्तकों में यह बताया जा चुका है कि इस साधना से किस प्रकार भौतिक एवं आध्यात्मिक ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। जहाँ सद्विचार बढ़ेंगे वहाँ सत्कार्य होना स्वाभाविक है। जब सद्विचारों और सत्कार्यों के लिए जीवनक्रम में समुचित स्थान मिल गया तो सुख-शांति, उन्नति और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होने में संदेह की गुंजाइश नहीं रहती।

सद्बुद्धि की—गायत्री की उपासना से—प्राप्त हुए सदाचार के फलस्वरूप जो आत्मबल बढ़ता है, उससे हमारी धार्मिक महत्त्वाकांक्षाओं की सहज ही पूर्ति हो सकती है। आत्मिक पवित्रता, आध्यात्मिक सुस्थिरता के फलस्वरूप स्वर्गप्राप्ति, जीवनमुक्ति, ब्रह्म-निर्वाण, ईश्वर-प्राप्ति, ऋद्धि-सिद्धि आदि की उपलब्धि संभव है। अपनी आंतरिक स्थिति में सुधार किए बिना केवल किसी मंत्र विशेष, देवता विशेष या कर्मकांड विशेष का विधान पूरा कर लेने से उपर्युक्त उद्देश्यों की उपलब्धि नहीं हो सकती। इसलिए गायत्री उपासना ही सच्चे अर्थों में उन सब लाभों को प्राप्त कराने में समर्थ हो सकता है जिनकी हम लोग आमतौर से धर्म-कर्म करते हुए आकांक्षा किया करते हैं। इस आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर जैसे-जैसे हम अग्रसर होते हैं वैसे ही वैसे हमारी भौतिक उलझनें भी सुलझने लगती हैं।

अधिकांश आपत्तियों, चिंताओं, कठिनाइयों का कारण हमारी अपरिष्कृत विचारधारा होती है, मनुष्य की अपनी निज की अनेकों बुरी आदतें, उलटी समझ, आलस्य, प्रमाद, ओछी मनोवृत्ति, अहंमन्यता, संकीर्णता, अनुदारता, शेखीखोरी, दोषदृष्टि, बेईमानी, कृतघ्नता, कंजूसी कर्त्तव्यहीनता, परिस्थिति से अधिक महत्त्वाकांक्षा, कटुता आदि बुराइयाँ बहुत सी कठिनाइयाँ एवं उलझनें पैदा करती रहती हैं। इन्हीं के कारण अनेकों शत्रु उत्पन्न हो जाते हैं, दूसरों के सहयोग का अभाव भी इन्हीं कमजोरियों के कारण रहता है। जब यह दुर्बलताएँ दूर होने लगती हैं तो अनेकों समस्याएँ भी सहज ही सुलझ जाती हैं। उदार दृष्टिकोण

अपनाने से दूसरों का स्नेह, सद्भाव और सहयोग उपलब्ध होने लगता है, उन्नति का द्वार खुलता है और सुख-संपत्ति की अभिवृद्धि तेजी से होने लगती है। इस प्रकार गायत्री उपासना का महत्त्व समझने वाले, उसकी तह तक पहुँचने वाले—उसके संदेश और आदर्श को हृदयंगम करने वाले व्यक्ति का आध्यात्मिक और भौतिक जीवन दिन-दिन अधिक पवित्र एवं सुख-शांतिमय बनता चला जाता है।

गायत्री उपासना व्यक्तिगत रूप से मनुष्य की आध्यात्मिक और भौतिक सुख-शांति को बढ़ाने में बहुत सहायक होती है। व्यक्तियों का समूह ही समाज या राष्ट्र है। किसी समाज के यदि अधिकांश लोग सज्जन बन जाएँ तो वह सारा समाज या राष्ट्र प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। जिस समय में अधिकांश व्यक्ति सन्मार्ग पर चलने वाले होते हैं, वह समय सतयुग कहलाता है। गायत्री उपासना द्वारा व्यक्तिगत चरित्र निर्माण की प्रक्रिया अंततः राष्ट्रीय, सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान का हेतु बनती है।

किसी न किसी रूप में नित्य गायत्री उपासना एवं सुविधानुसार यज्ञ-यजन करते रहना—गायत्री और यज्ञ में सन्निहित आदर्शों को हृदयंगम करते रहना—एक कल्याणकारी साधना है, पर इसका स्वरूप यदि व्यक्तिगत पूजा तक ही सीमित रहे तो व्यापक क्षेत्र में युग निर्माण का लक्ष्य बहुत धीरे-धीरे पूरा होगा। प्रगति आशाजनक गति से हो इसके लिए इस कार्यक्रम को सुसंगठित रूप से सामाजिक उत्कर्ष के लिए सुव्यवस्थित रूप से चलाना होगा। संगठन ही शक्ति है। किसी विचारधारा एवं क्रियापद्धति को विस्तृत क्षेत्र में सुप्रतिष्ठित करने के लिए एकमात्र आधार सुसंगठित प्रयत्न ही हो सकते हैं। इतिहास साक्षी है कि जब भी जनमानस को बदलने की कोई प्रक्रिया संपन्न हुई तो उसके पीछे संगठित प्रयत्न अवश्य रहे हैं। आर्य धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म के फैलने की सफलता के पीछे उनके प्रचारकों के प्रबल प्रयत्न ही प्रधान रूप में कार्य करते रहे हैं।

चारित्रिक संगठित प्रयत्न की रूपरेखा

भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए—नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से युग निर्माण के लिए—सामाजिक एवं बौद्धिक क्रांति के लिए—आध्यात्मिकता, आस्तिकता एवं धार्मिकता की प्रतिष्ठापना के लिए भी संगठित प्रयत्न ही सफल हो सकते हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए युग निर्माण योजना द्वारा अखिल विश्व 'गायत्री परिवार' नामक संगठित प्रयत्न आरंभ किया गया है। इस संगठन की अब देश भर में लगभग ६००० प्रज्ञापीठें, शक्तिपीठें तथा लगभग ४ करोड़ सदस्य हैं। सदस्यता का किसी से, किसी प्रकार का कोई चंदा नहीं है, पर प्रत्येक सदस्य के लिए अपनी नित्य उपासना के अतिरिक्त दूसरों को सद्विचार देने तथा सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने के लिए समय निकालकर निरंतर प्रयत्न करते रहना ही प्रधान शर्त है।

जहाँ नित्य गायत्री उपासना करने वाले तथा सद्विचारों के क्षेत्र विस्तार में योग देने की प्रतिज्ञा करने वाले कम से कम १० से अधिक सदस्य बन जाते हैं, वहाँ 'गायत्री परिवार' की शाखा के ६ पदाधिकारी चुने जाते हैं—१. प्रधान, २. उप-प्रधान, ३. महासचिव, ४. सचिव, ५. कोषाध्यक्ष, ६. निरीक्षक। यह छह अधिकारी संस्था का कार्य नियमित रूप से चलाते रहने के लिए उत्तरदायी होते हैं। शाखा का कार्यालय स्थापित करना, उसके सदस्य रजिस्टर, मीटिंग रजिस्टर, हिसाब रजिस्टर, पत्र व्यवहार रजिस्टर आदि रखना, साप्ताहिक या पाक्षिक हवन-सत्संग कराते रहना। पुस्तकालय स्थापित करके सत्साहित्य इकट्ठा करना और उसे सदस्यों को पढ़वाते रहना 'गायत्री परिवार की पत्रिकाओं' द्वारा हर महीने विचार क्रांति-प्रज्ञा अभियान के केंद्र से आते रहने वाले संदेशों को कार्यान्वित करना आदि कार्य भी इन पदाधिकारियों के जिम्मे होते हैं। संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समय-समय पर कार्यक्रम बनाते रहना, नए सदस्य बढ़ाते रहना तथा नए क्षेत्रों में जाकर नई शाखाएँ स्थापित कराते रहना भी इन शाखा-संचालकों का एक

कार्य है। संगठन को मजबूत रखने, बढ़ाते रहने तथा सक्रिय रखने के लिए कुछ न कुछ सोचते और करते रहना संस्था के हर सदस्य का कर्त्तव्य नियत किया गया है।

गायत्री परिवार का यह संगठन, भारतवर्ष की धार्मिक संस्थाओं में सदस्य संख्या ही नहीं, जीवन, उत्साह, सक्रियता, निष्ठा और सच्चे कार्यकर्ताओं की बहुलता की दृष्टि से भी प्रथम श्रेणी का संगठन है। नवम्बर १९५८ में इस संस्था के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का एक कामकाजी सम्मेलन—आगामी कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए बुलाया गया था। उसमें केवल ऐसे नैष्ठिक कार्यकर्त्ता ही सम्मिलित होने दिए गए थे, जो एक वर्ष तक सवालाख गायत्री अनुष्ठान, ५२ उपवास, ब्रह्मचर्य, भूमिशयन, धर्मफेरी, ज्ञानदान आदि कठोर परीक्षा-प्रतिबंधों को पूरा कर सकें। इन कष्टसाध्य परीक्षा संकल्पों को पूरा करके देश के कोने-कोने से लगभग १ लाख प्रतिनिधि मथुरा आए थे। इस सम्मेलन में १००० कुंडों की १०१ यज्ञशालाओं में २४ लाख आहुतियों का हवन भी था। यह यज्ञ सम्मेलन बहुत ही सफल रहा। प्रतिनिधियों के अतिरिक्त कई लाख जनता ने भी इसमें बड़े उत्साहपूर्वक भाग लिया। आयोजन के अत्यंत विशाल एवं खरचीली योजना को इन व्रतधारी सक्रिय कार्यकर्ताओं ने आपसी श्रमदान तथा स्वेच्छा सहयोग के आधार पर ही पूरा कर लिया। इस यज्ञ की सफलता इस संगठन की मजबूती एवं विस्तृतता का प्रमाण मानी जा सकती है।

अब गायत्री परिवार द्वारा नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठापना एवं प्रचलित सामाजिक बुराइयों को घटाने के लिए कार्य करना है। यह कार्य है भी धार्मिक संस्थाओं का ही। राजनीतिक, आर्थिक या सामाजिक संगठन अन्य कार्य कर सकते हैं परंतु पारमार्थिक श्रद्धा, सत् में निष्ठा, आस्तिकता को मनुष्य की अंतरात्मा में गहराई तक प्रतिष्ठापित कर देने में सफलता प्राप्त करना उनके लिए कठिन है। सरकारी आदेश से लोग ब्रह्मचर्य से रहने या उपवास करने को तैयार नहीं हो सकते, पर वही

बातें यदि किसी प्रभावशाली धर्मकेंद्र से कही जाएँ तो आसानी से बहुत कुछ हो सकता है।

युग निर्माण योजना का आगामी कार्यक्रम यह है कि धर्म के दस लक्षणों—योग के प्रारंभिक दस साधन यम-नियमों के आदर्शों के प्रति जनमानस में गहरी आस्था पैदा करने के लिए पूरा-पूरा प्रयत्न किया जाए। (१) ईमानदारी पर दृढ़ रहना—सत्य, (२) किसी को न सताना-अहिंसा, (३) अनधिकृत वस्तुओं का उपयोग न करना—अस्तेय, (४) इंद्रियों का विलासिता की दृष्टि से नहीं, उपयोगिता की दृष्टि से उपयोग करना—ब्रह्मचर्य, (५) अनावश्यक वस्तुओं का संग्रह न करना—अपरिग्रह, (६) सर्वत्र स्वच्छता-पवित्रता रखना—शौच, (७) विपन्न परिस्थितियों में उद्विग्न न होना—संतोष, (८) कष्ट-सहिष्णु, साहसी, श्रमशील और परोपकारी बनना—तप, (९) स्वाध्यायशील, विवेकवान बनना—स्वाध्याय, (१०) ईश्वर की सर्वज्ञता, न्यायशीलता और कर्मफल के परिणामों पर आस्था रखना—ईश्वर प्रणिधान। यह धर्म के दस लक्षण हैं जिन्हें महर्षि पतंजलि ने 'यम-नियम' का नाम दिया है।

इन दस आदर्शों में मानवता की सारी धर्म संहिता सन्निहित है। इन सूत्रों के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने के लिए यदि प्रभावशाली ढंग से जनता को प्रस्तुत किया जा सके तो निश्चय ही सच्चरित्रता एवं नीतिमत्ता की आशाजनक अभिवृद्धि हो सकती है और उसके साथ-साथ ही सुख-शांति का, सेवा और सहयोग का, प्रसन्नता और संपन्नता का क्षेत्र विस्तृत हो सकता है। युग निर्माण योजना इस प्रचार और प्रसार को अपने हाथ में लेकर अग्रसर होने जा रही है।

उन्मूलन करने योग्य बुराइयाँ

स्वार्थपरता, बेईमानी, शोषण, निष्ठुरता, विलासिता, लोभ, अनुदारता, आलस्य, अज्ञान, अहंकार आदि व्यक्तिगत दुर्गुण मनुष्य की अधार्मिकता के कारण उत्पन्न होते हैं। यह दुर्गुण जब अनेक लोगों में

फैल जाते हैं, तब वे धीरे-धीरे सामाजिक कुप्रथा का, रिवाज एवं परंपरा का रूप धारण कर लेते हैं। एक के देखा-देखी दूसरा उन्हें अपनाता है। जन स्वभाव में वे बातें ऐसी शामिल हो जाती हैं कि उनमें कोई विशेष बुराई भी प्रतीत नहीं होती। इतना होते हुए भी वे कुप्रथाएँ अपना हानिकारक प्रभाव तो छोड़ती नहीं। लोग उनके कारण दिन-दिन तबाह होते जाते हैं। इन सामाजिक बुराइयों को प्रबल जनमत जाग्रत करके, किसी संगठित समाज द्वारा उनका असहयोग या विरोध आंदोलन खड़ा करने से ही अभ्यस्त लोकमानस में परिवर्तन कराया जा सकता है। गायत्री परिवार ऐसे आंदोलन की भी तैयारी कर रहा है। जिससे लोगों के स्वभाव में घुल गई कुरीतियों को हटाना संभव हो सके।

मांसाहार, बीड़ी, हुक्का, भाँग, गाँजा, अफीम, चरस, शराब आदि खाने-पाने संबंधी ऐसी कुरीतियाँ हैं जो सदाचार, स्वास्थ्य और धन को बरबाद करती हैं।

जुआ, सट्टा, लॉटरी, फीचर यह वे बुराइयाँ हैं जो बिना मेहनत किए धन प्राप्त करने के लालच से उत्पन्न होती हैं। दूध, घी, मसाले, दवाएँ आदि में मिलावट करके उससे अनुचित लाभ उठाना, चोरी, ठगी, उठाईगीरी, जेबकटी, धोखेबाजी, बेईमानी, लूट, डकैती आदि के दुस्साहस, कम नापना, कम तौलना, अधिक मुनाफा लेना, बढ़िया बताकर घटिया चीज देना, कम मेहनत करके अधिक वेतन लेना, टैक्स चुराना, रिश्वत देना और लेना आदि आर्थिक भ्रष्टाचार से समाज का आर्थिक ढाँचा लड़खड़ाने लगता है और इन बुराइयों में लगा हुआ व्यक्ति अन्य अनेकों बुराइयों की ओर अग्रसर होता है।

हिंदू समाज की वैवाहिक व्यवस्था एक अभिशाप बन रही है। बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, दहेज, विवाह के समय सामर्थ्य से अधिक कीमती जेवर-वस्त्र एवं दिखावे की चीजों की आवश्यकता, बरात चढ़ाने तथा प्रीतिभोज में अपव्यय आदि कारण ऐसे

हैं, जिनसे विवाह जैसा साधारण संस्कार हर हिंदू के लिए एक सिरदरद बना हुआ है। कितनी ही कन्याओं को इन्हीं कुरीतियों की वेदी पर बलिदान होना पड़ता है।

भूत-पलीतों के नाम पर फैला हुआ अज्ञान समाज के लिए कलंक है। देवी के आगे भैंसे, बकरे, मुर्गे, सुअर आदि की बलि देने की प्रथा अभी भी अनेक प्रांतों में जारी है और नवरात्रि के दिनों हजारों निर्दोष पशु-पक्षियों का खून बहाया जाता है। भूत-पलीत के नाम पर 'सयाने-दिवाने' नाना प्रकार के अनाचार फैलाते हैं। धर्म व्यवसायी पंडित-पुरोहित परलोक में कई गुना मिलने का प्रलोभन देकर भोली जनता को ठगते रहते हैं। मृत्युभोज की घृणित प्रथा के कारण जिस घर में मृत्यु हुई है, उसी में कुछ ही दिन बाद लोग माल मलाई उड़ाने को निस्संकोच तैयार हो जाते हैं। यह ऐसी प्रथाएँ हैं जिनका बंद होना जरूरी है।

फैशनपरस्ती, शौकीनी, फजूलखरची, शान-शौकत, शेखीखोरी, विलासिता, ऐयाशी, सिनेमाबाजी, कामुकता, गंदी तसवीरें, गंदी पुस्तकें, व्यभिचार, अमर्यादित कामसेवन, अप्राकृतिक व्यभिचार आदि बुराइयों के कारण हमारा शारीरिक एवं मानिसिक स्वास्थ्य चौपट हुआ जा रहा है।

उद्दंडता, उच्छृंखलता, गुंडागीरी, अवज्ञा, अशिष्टता, असहिष्णुता, असंयम के उदाहरण घर-घर में मिल सकते हैं। नई पीढ़ी के लड़के और लड़कियों में यह प्रवृत्तियाँ और भी अधिक बढ़ रही हैं। मर्यादाओं पर रहना सबको बुरा लगता है। कृतज्ञता का स्थान कृतघ्नता लेती जा रही है।

महिलाओं की स्थिति भी दयनीय है। परदा प्रथा और सामाजिक हीनता के कारण वे शिक्षा तथा स्वावलंबन से रहित बुरी स्थिति में पड़ी हुई है। गृह-व्यवस्था तथा शिशुपालन भी उनके अज्ञान के कारण अस्त-व्यस्त है। राष्ट्र का आधा अंग इस प्रकार अपाहिज पड़ा हो तो यह भी प्रगति में एक बड़ी बाधा ही मानी जाएगी।

यों हमारे समाज में अच्छाइयाँ भी बहुत हैं। अनेक देशों की अपेक्षा हमारा समाज एवं व्यक्तिगत चरित्र काफी ऊँचा है, फिर भी उपर्युक्त बुराइयाँ कम महत्त्व की नहीं हैं। इन्हें दूर करने के लिए यदि कोई प्रयत्न नहीं किया गया तो जिस गति से प्रगति होनी चाहिए वह न हो सकेगी। आर्थिक दृष्टि से यदि हमारी उन्नति भी हुई तो वह सामाजिक हीनावस्था के कारण कुछ विशेष उपयोगी साबित न हो सकेगी। सरकारी शिक्षा पद्धति धीमी और अपूर्ण है। उसे तेज करने एवं उससे छूटे हुए धार्मिक विषयों को पूरा करने के लिए गैर-सरकारी प्रयत्न भी होने चाहिए। (भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन एक विशिष्ट पहल है।)

इस प्रकार बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक क्रांति के लिए एक बहुत बड़ा कार्यक्षेत्र पड़ा हुआ है। गायत्री परिवार के धार्मिक संगठन ने अब इन्हीं गुत्थियों को सुलझाने में आगे बढ़कर काम करने का निश्चय किया है। धार्मिक वातावरण निर्माण करने का तात्पर्य सज्जनता, मानवता और कर्त्तव्यपरायणता की स्थापना करना ही है। ईश्वर उपासना का सबसे बड़ा चिह्न यही है कि हम बुराइयों से डरें और भलाइयों की वृद्धि करते हुए ईश्वर को प्रसन्न करें।

हमारे अगले कदम

सद्विचारों का महत्त्व बताने और सत्कर्मों को बढ़ाने एवं बुराइयों को छोड़ने की जनसाधारण से प्रतिज्ञा कराने के लिए स्थान-स्थान पर छोटे-बड़े सामूहिक यज्ञ आयोजन करने का कार्यक्रम बनाया गया है। जिस प्रकार गंगाजली की शीशी हाथ पर रखकर कसम खाने का अवसर आने पर साधारणतः धार्मिक व्यक्ति उस कसम को अधिक महत्त्वपूर्ण मानता है। जिस प्रकार विवाह संस्कार के समय अग्नि देवता को साक्षी देकर वर-वधू जो प्रतिज्ञाएँ करते हैं, उनका महत्त्व मानते हैं, उसी प्रकार गायत्री जप करके, गायत्री यज्ञ में हवनकर्त्ता बनकर, उपवास, ब्रह्मचर्य आदि नियमपालन के उपरांत जो लोग उपर्युक्त

बुराइयों को छोड़ने की प्रतिज्ञा करेंगे, उसमें से अधिकांश उन्हें निभाएँगे भी, ऐसा विश्वास है। इस प्रकार ये छोटे-बड़े यज्ञों के आयोजन सन्मार्ग में जनता की प्रवृत्ति बढ़ाने में बहुत सहायक होंगे।

प्रत्येक यज्ञ आयोजन के समय अधिकाधिक जनता को एकत्रित करने और उसे युग अनुरूप कई दिन तक प्रौढ़ विचार देने का कार्यक्रम चलाया जाए। इस प्रकार आध्यात्मिक उन्नति, वायुशुद्धि, आत्मिक और शारीरिक आरोग्य, देवपूजा आदि धर्म प्रयोजनों की पूर्ति के अतिरिक्त लोक-शिक्षण की एक महत्त्वपूर्ण शृंखला चल पड़ेगी।

विचारों के परिवर्तन के लिए लेखनी और वाणी दो ही प्रधान औजार हैं। गायत्री सम्मेलनों, पारिवारिक सत्संगों, विचारगोष्ठियों द्वारा नैतिक पुनरुत्थान के विचार-वाणी की सहायता से सर्वत्र फैलाएँ जाएँगे।

लेखनी के द्वारा भी यह कार्य होगा। संस्था अत्यंत सस्ता लागत से भी कम मूल्य पर बेचने एवं मुफ्त वितरण करने के लिए भारी संख्या में साहित्य तैयार करेगी और उसे घर-घर पहुँचाने का प्रयत्न करेगी। विचार परिवर्तन के लिए इस प्रकार का साहित्य बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। ईसाई संस्थाएँ इस माध्यम से बहुत कार्य करने में सक्रिय भी हुई हैं। यह तरीका हमें भी अपनाना है। संस्था की ओर से 'अखण्ड ज्योति' मासिक पत्रिका ७१ वर्ष से निकल रही है। मासिक 'युग निर्माण योजना' भी अखंड ज्योति की सहयोगी पत्रिका है। अब 'प्रज्ञा अभियान' नामक उच्चकोटि का पाक्षिक पत्र संसार की सत्प्रवृत्तियों का, सज्जनों द्वारा किए हुए प्रशंसनीय सत्कार्यों का, परिचय कराने के लिए शांतिकुज हरिद्वार से और निकाला जा रहा है।

सद्विचार प्रसार कार्य के लिए उन कर्मठ कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है जो योग्यता एवं पवित्रता की दृष्टि से इस कार्य के उपयुक्त हों। ऐसे कार्यकर्त्ता ढूँढ़ने और उन्हें निर्धारित लक्ष्य के लिए योग्य बनाने के लिए प्रयत्न आरंभ कर दिया गया है। तपोभूमि में एक

ऐसे विद्यालय की स्थापना की गई है जिसमें लेखनी और वाणी द्वारा सद्विचार प्रसार का उद्देश्य पूर्ण करने के लिए वक्तृता, गायन, लेखन, साहित्य निर्माण की विधिवत शिक्षा दी जाती है। जो लोग अपने भावी जीवन में विचार निर्माण का व्रत लेंगे, वे ही इस विद्यालय में भरती किए जाएँगे और उन्हें मानव जाति की विभिन्न समस्याओं के संबंध में गहरा अध्ययन कराया जाएगा। साथ ही लेखनी और वाणी को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए व्यावहारिक एवं कलात्मक अभ्यास भी कराया जाएगा। (शांतिकुंज द्वारा देव संस्कृति विश्वविद्यालय की अति प्रभावशाली, अभिनव स्थापना सन् २००२ से विश्व स्तर पर प्रशंसित हो रही है। इस वि. वि. में छात्रों के लिए व्यक्तित्व निर्माण, समाज निर्माण एवं देव संस्कृति के लिए बहुत कुछ करने के लिए अनेकों आयाम हैं।)

तपोभूमि में एक अच्छा प्रेस लगाया गया है, जिसमें प्रेस कार्य की विभिन्न मशीनें हैं। इस विषय की शिक्षा पाना एक कुशल पत्रकार एवं साहित्यकार के लिए आवश्यक भी है। अपना निज का प्रेस खोलने या प्रेस कर्मचारी बनकर आजीविका कमाकर स्वावलंबी बनने के लिए भी यह शिक्षा आवश्यक है। इस प्रेस द्वारा अत्यंत सस्ती विचारोत्तेजक पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, प्रचार-पत्रिका, पर्चे, पोस्टर, आदर्श वाक्य, चित्र छापे जाएँगे और उन्हें लागत मूल्य पर या उदार लोगों द्वारा बिना मूल्य वितरण करा गायत्री परिवार की ६००० शाखाओं द्वारा आधिकारिक जनसमाज तक पहुँचाने का प्रयत्न किया जाएगा।

तपोभूमि के इस प्रचार विद्यालय में से निकले हुए छात्र यहाँ से जो भावनाएँ और विचारधाराएँ लेकर निकलेंगे उन्हें अपने क्षेत्र में क्रियात्मक कार्यक्रमों द्वारा फैलाने का प्रयत्न करेंगे। इनकी प्रवृत्तियों के केंद्र 'गायत्री ज्ञानमंदिर' कहलावेंगे। पंचायती घरों की तरह, प्राइमरी स्कूलों की तरह, शिवालय, देवालयों की तरह ज्ञानमंदिरों का जाल भी

देशभर में पूरा फैलाया जाए यह स्वप्न इस संस्था के हैं। श्रमदान एवं मुट्ठी-मुट्ठी आर्थिक सहयोग से छोटे-छोटे ज्ञानमंदिर आसानी से बनाए जा सकते हैं। यह ज्ञानमंदिर स्थानीय जनता को इकट्ठा होने, सामूहिक प्रार्थना एवं सत्संग करने, धार्मिक कथाएँ एवं प्रौढ़ पाठशालाएँ चलाने, पुस्तकालय, वाचनालय, व्यायामशाला एवं थोड़ी दवादारू की व्यवस्था रखने से बड़े उपयोगी सिद्ध होंगे। इन्हीं में क्षेत्रीय लोक-सेवक के निवास की व्यवस्था होगी। मुट्ठी-मुट्ठी अन्न गायत्री परिवार का प्रत्येक सदस्य प्रतिदिन एक घड़े में डालते रहने की प्रक्रिया चलावेंगे जिससे इन ज्ञानमंदिरों की अर्थव्यवस्था आसानी से चलती रहेगी। यह ज्ञानकेंद्र राष्ट्र के बौद्धिक निर्माण में आशाजनक योग देंगे, ऐसा विश्वास है।

प्रचार यात्रा

गायत्री परिवार के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने देशव्यापी दौरा करने और स्थान-स्थान पर विचारगोष्ठियाँ आयोजित करने का कार्यक्रम बनाया है। इस संस्था के प्रधान सेवक (आचार्यजी) ने अपनी पारिवारिक तथा अन्यान्य जिम्मेदारियों से छुटकारा पाकर देशभर में विचारशील लोगों के छोटे-छोटे सम्मेलनों का आयोजन करके राष्ट्र के नैतिक निर्माण के लिए विचार-विनिमय करने तथा स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार इस लक्ष्य की पूर्ति करने वाले कुछ कार्य आरंभ कराने का निश्चय किया है। पूज्य श्री गुरुदेव ने गायत्री जयंती, सन् १९९० में महाप्रयाण किया। उनका संदेश था कि, यह धर्मप्रचार-यात्रा बराबर जारी रहेगी और इस संस्था के प्रति, गायत्री और यज्ञ के प्रति या उसके संचालकों के प्रति जो अनुराग जनता में उत्पन्न हुआ है, उसका पूरा उपयोग सद्विचारों के, सत्कार्यों के, बुराइयों से टक्कर लेने के क्षेत्र को विस्तृत करने में ही किया जाएगा।

इस समय संगठनात्मक एवं प्रचारात्मक दो ही कार्य हाथ में लिए गए हैं। पर आगे चलकर कुछ ऐसे रचनात्मक एवं आंदोलनात्मक

कार्यक्रम हाथ में लेने का विचार है जिससे बुराइयों के प्रति घृणा फैले और सत्प्रवृत्तियों की प्रतिष्ठा एवं प्रशंसा हो। जहाँ संभव हो वहाँ बुराइयों के, कुरीतियों के विरुद्ध असहयोग, प्रतिरोध, संघर्ष एवं सत्याग्रह का उपयोग किया जाए। देवताओं के आगे पशुबलि जैसी कलंकपूर्ण धार्मिक प्रथाओं के विरुद्ध सत्याग्रह जैसे अस्त्रों को काम में लाया जा सकता है। मृत्युभोज का बहिष्कार हो सकता है। दहेज के विरुद्ध लड़के और लड़कियों से प्रतिज्ञा कराई जा सकती है कि यदि उनके अभिभावक ठहरौनी करें तो वे उस विवाह के लिए ही तैयार न हों। बाल विवाह के लिए शारदा एक्ट का कानून मौजूद है, ऐसे विवाहों को रोकने के लिए उस कानून का सहारा लिया जाए। जातीय पंचायतें करके अलग-अलग जातियों में प्रचलित भिन्न-भिन्न प्रकार की कुरीतियों को कम किया जाए, उन्हें बंद न करने वालों को पंचायतों द्वारा सामाजिक बहिष्कार करने का या कोई और दंड देने की व्यवस्था हो। इस प्रकार विभिन्न बुराइयों के विरुद्ध जनता में घृणा, विरोध और रोष पैदा करने तथा विभिन्न अच्छाइयों के प्रति आदर, प्रशंसा, प्रतिष्ठा एवं सामूहिक हर्ष-सम्मान प्रदर्शन करने के आयोजन कराए जाएँ। धन की अपेक्षा यदि 'श्रेष्ठता' के प्रति लोकमानस में सम्मान उत्पन्न हो जाए तो प्रचलित बुराइयों में से अधिकांश अपने आप समाप्त हो सकती हैं।

गायत्री यज्ञ आंदोलन नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान का ठोस प्रयत्न है। इसमें हमारी आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख-शांति तथा सफलता के सभी बीजांकुर मौजूद हैं। संस्था के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रत्येक गायत्रीप्रेमी को निम्न कार्यक्रमों में से जितना अधिक कार्यभार अपने ऊपर लेना संभव हो, उसके लिए सच्चे मन से प्रयत्न करना चाहिए।

(१) अपनी गायत्री उपासना को निष्ठापूर्वक चलावें। उसे नियमित, नियत संख्या में, नियत समय पर शांत चित्त और विधिवत करने का प्रयत्न करें।

(२) संगठित रूप से किया हुआ हर कार्य अधिक सफल होता है। एक-दूसरे से प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन मिलते रहने से लक्ष्य की ओर प्रगति और भी तीव्रगति से होती है। इसलिए आप इस साधना-संगठन में सम्मिलित हों, गायत्री परिवार के सद्स्य बनें।

(३) अपने यहाँ कम से कम १० गायत्री उपासक बनाकर गायत्री परिवार की स्थापना करें। संगठन के द्वारा धर्मप्रचार के पुनीत कार्य को आगे बढ़ाने में बहुत सुविधा होती है।

(४) अपने घर में गायत्री उपासना को आरंभ कीजिए। आपका इष्ट कुछ भी हो वेदमाता गायत्री की स्थापना अवश्य रहे। घर के सब लोग भोजन से पूर्व गायत्री उपासना कर लिया करें, ऐसी परंपरा डालनी चाहिए।

(५) उपासना के साथ-साथ स्वाध्याय के लिए भी नित्य समय निकालिए। घर में गायत्री ज्ञानमंदिर स्थापित कीजिए, जिसमें सत्साहित्य मँगाने और उसे पढ़ने या दूसरों को पढ़ाने की व्यवस्था रहे।

(६) समय-समय पर सामूहिक उत्सवों, सत्संगों, विचारगोष्ठियों का आयोजन किया करें। बड़े यज्ञ आयोजन भी यदा-कदा होते रहें। अधिक लोगों को अपने विचारों का बनाने का प्रयत्न कीजिए।

(७) देव संस्कृति वि. वि. शांतिकुंज एवं गायत्री तपोभूमि मथुरा में चलने वाले सांस्कृतिक विद्यालय में अपने क्षेत्र से कुछ सुयोग्य शिक्षार्थी भेजिए जो वहाँ से लेखनी तथा वाणी तथा संजीवनी विद्या के धनी होकर लौटें और सद्ज्ञान के विस्तार के लिए कुछ ठोस कार्य कर सकें।

सद्ज्ञान ही गायत्री है, सत्कर्म ही यज्ञ है। गायत्री और यज्ञ आंदोलन में सहयोग देकर आप धार्मिक क्रांति के महान लक्ष्य को पूरा करने में सहायक हो सकते हैं।

❑❑

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)